

Sanskrit Kurannamel

Part-3

Urda Sahasratkara

Dr. Mohanrao Sharma Gaud

Dr. Radhakrishna Sharma Gaud

Urdu

1954

Price Rs. 10.00

श्री प्रथम वेदव्यक्तः *

उद्गाता - इन्द्रमन

विश्वं शिरामणि विन्वी भूयन् पं० नारायण शर्मा गौड़ रचित

पं० श्रीराममल्ल शर्मा भाग

सत्य वक्ता



पण्डित-श्रीराम शिरामणि विन्वी भूयन् पं० नारायण शर्मा गौड़

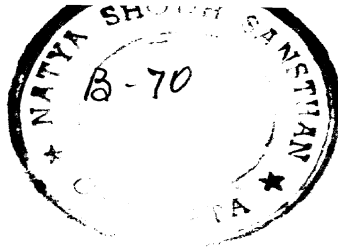
विश्वं शिरामणि विन्वी भूयन् पं० नारायण शर्मा गौड़

प्रथम प्र० स हाथरस

सब हक स्वाधीन है । सन् १९४३

(शुभ)

बिना छुट्टर की किताब खोरी की समझी जायगी



N.S.S.

Acc. No. 1988/401

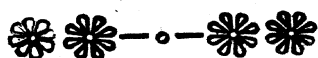
Date 24.5.88

Item No. B/H/70 old.

Don. by C. S. Mehta

श्री श्याम देवाय नमः

सं० पूरनमल भक्ततीसरा भाग



मङ्गला चरण

दो०—प्रथम सुमिर गवरीश सुत, विघन विदारनहार ।
जिन की कृपा कटाक्ष से, होत सकल भव पार ॥

चौ०—होत सकल भव पार श्याम मन गवरि तनय की धरतो
होँ सानन्द समाप्त कार्य सब कष्ट शम्भु सुत हरते ॥
करें भक्त की पक्ष सर्दा धन धान्ब सम्पदा भरते ।
इन्दरमन मोविन्ददास स्तुति गणेश की करते ॥

दो०—नमो निरजा के नन्दन । हरण अथ आनन्द कन्दन
अनुग्रह करिये स्वामी ।

पूरण हो मन की इच्छा वर दीजै अन्तरयामी ॥
कवि का

दो०—सुन गुरु गोरख का जिकर, डरी सुन्दरा नार ।
दिल ही दिल में इस तरह, करने जमी विचार ॥

स म्प्रादे का मन ही मन में

दो०—ओ हो जो कह गये थे, काशी के महाराज ।

प्रभु कृपा से वह बचन, ठीक हुए हैं आज ॥

चौ०—ठीक हुए हैं आज करी जगदीश महरवानी है ।

गोरख गुरु को सुना बड़ा ज्ञानी श्यानी दानी है ॥

भ्राँको कर नाब की करू निज सफल जिन्दगानी है ।

सुभूषा कर खूब सुरादेँ भांगू मनमानी है ॥

दो०—ये पकका पदा बढ़ाया । नहीं समझे समझायो ॥

क्यों नाहक जिद बढ़ाऊँ ।

कर प्रसन्न गोरख गुरु से ही इसै मान कर लाऊं ॥

कवि का

दो०—कर दिल ही दिल मशवरा, सुन्द्रादे सुकुमार ।

पूरनमल से रही बों, मीठे बचन उचार ॥

सुन्द्रादे का

दो०—गोरख के डर से घुमै, डरा न सक्ते आप ।

मगर समझ कुछ होगई, मैं खुद ही चुपचाप ॥

चौ०—मैं खुद ही चुपचाप खैर ये बाद बिवाद हटादो ।

ठहरी कहां जमात नाथ की चल कर साथ दिखादो ॥

भ्रांकी बांकी गुरु अपने की श्री महाराज करा दो ।

पैर पहुँ अमले पिछले सब पाप मेरे छुड़वादो ॥

दो०—ले व्यञ्जन विविधि भांति के । जिमावन हित जमात के

आप के साथ चलूँगी ।

करि प्रसन्न सेवा से गुरु को मन माना बर लूंगी ॥

पूरनमल का

दो०—साथ हमारे में तेरा, चलना होय फिजूल ।

भिन्ना तेरे हाथ से, करें न गुरु कबूल ॥

चौ०—करें न गुरु कबूल भीख यह खवाल हटादे दिल से ।

आहिर हो रही साफ कम्बखत हत्या तेरी शकल से ॥

छिपै न गुरु से मेद विदित होजाय जोन के बल से ।

करना चाहै खुश उनको क्यों खारिज हुई अकलसे ॥

दो०—गुरु मेरे का दरशन । न कर सक्ता पापी जन ॥

पाप तें कीना मारी ।

लाखों सन्तों के कटबाये सर पापिन हत्थारी ॥

सुन्द्रादे का

दो०—भिन्ना मेरे हाथ की, अमर गुरु ना खाई ।

तौ फिर क्यों मानन यहाँ, तुम को दिया पटाई ॥

चौ०—फिर क्यों दिया पटाई सखन ये नहीं परभू मैं आते

पूरन सासरा

भिच्चा गर मेरे यहाँ से तुम अमर वहाँ लै जाते ॥

कुल जमात युत गुरु तुम्हारे खाते या नहि खाते ।

नहीं बहाना चल आप ये भूँठ महा फरमाते ॥

दो०—ले स्वजन विविधि भांति के । जिमावन हित जमात के ॥

आप के साथ चलूंगी ।

कर प्रसन्न सेवा से गुरु को मन माना बरलूंगी ॥

पूरनमल का

दो०—भिच्चा करने यहाँ पर, मुझै न मेजा नाथ ।

गुरु भइयो ने छल किया, रानी मेरे साथ ॥

बौ०—राना मेरे साथ छल किया मुझै फंसाना चाहा ।

बोली मोली मार यहाँ से भीख मँगाना चाहा ॥

आ मतलब उन का ये मेरा शीश कटाना चाहा ।

दुनियाँ से पूरन का नामो निशाँ मिटाना चाहा ॥

क०—गुरु का प्यार मेरे पर न गुरु भइयो को माया है ।

बहाना भीख का कर के मुझै यहाँ पर पठाया है ॥

न था आमाह उन की बाल से छल से रक्षावत से ।

दिली मतलब जो था उन का सो सब अब जान पाया है ॥

दो०—न गुरु ने मुझै पठाया । बिन कहे उन से आया ॥

खबर जो वह पा लेते ।

भिच्चा लैने तेरे यहाँ पर कभी न आने देते ॥

सुन्द्रादे का

दो०—जोनी अमर जमात के, मानै तुम से बैर ।

तो अब उन की जान की, मती समझना खैर ॥

बौ०—मती समझना खैर बैर की सब को कड़ो सजा हूँ ।

छल फरेब का चल कर उन दुष्टों को मजा चखा हूँ ॥

जितने हैं जमात में जोनी सब की बुला कजा हूँ ।

हुकम करी सो करूँ साथ सर के हरशर बजा हूँ ॥

दो०—ले स्वजन विविधि भांति के । जिमावन हित जमात के ॥

आप के साथ चलूँगी ।

कर प्रसन्न सेवा से गुरु को मन माना बर लूँगी ॥

पूरनमल का

दो०—तल्ल कराने का उन्हें, मेरी नहीं विचार ।

नेकी करते नैक जन, बदी करें बदकार ॥

चौ०—बदी करें बदकार बदी का बेशक फल पावेंगे ।

सींच करीब न बैठन को साया शीतल पावेंगे ॥

वे गुनाह वे जुर्म किसी बेकस को कल पावेंगे ।

है ये नियम न्याय निधि का नहीं वह भी कल पावेंगे ॥

दो०—बही नर तैरी इच्छा । गुरु दिम ले चल भिच्चा ॥

भक्ति युत करना अरजी

हो कबूल या नहीं अनारी रही नाथ की मरजी ॥

कवि का

दो०—पूरनमल के बचन सुन, सुन्द्रादे सुकुमार ।

आनन फानन में तल्लव, कीए खिदमतगार ॥

चौ०—खिदमतगार बुलाइ तयार सामान सकल करवाये ।

सुजला खुरमा खस्ता मठरी और सुहार सुहाये ॥

माहनभोग इमरती लड्डू उच्चम सरिस बनाये ।

सुघड़ कचौरी पापड़ बढ़िया दाल सेव मन भाये ॥

आन्हा—बिदिधि माति की बनी मिठाई ताकी कुछ ना प
शुमार । बुड़ी पेड़ा शककरपारें बरफी गुभिया करै बहार।सोठ
कचरिया सरस खुरमा कई किसम के रखे अवार । साब सयते
दही बड़ा शुचि लुचई और त्रिकोन सुहार ॥ बहुत जन्द फुरती
से करवायो रानी सामान तयार । सवा तीन सी बँहनी वाले
झीने नफर कहार पुकार ॥ हुकम सुनायो तुरत फौज को साजे
चप्री सात हजार । रानी सुन्द्रादे उत महलन रचिपचि लनी
करन सिगार ॥ किशौ उबटनो न्हाय घोष के काढ़ लिये कप्री
से बार । अतर फुलेल डार केशन में लई मौम की पटिया पार ॥

मांग सिद्ध भाल पर बिंदी नयनन लोनों सुरमा सार । खौरि
 बन्दनी बैना पहिनी नथ भलकारी लई सम्हार ॥ चमकै चौप
 रची मुख बीरो दांठन भिस्ती करत बहार । कइनहुल कुबकुवी
 भूमका बाले वाली बुन्दे डार ॥ गुलीबन्ध पबमनिर्वा माला
 चम्पकली हंसली और हा । बाजू बरा नौनना जोशन छन
 कङ्कन की अत्रब बहार । दमो उभरियां अन्ना मुदरियां कनक
 आरसी जटित किनार । हाथन मँदरी हरी २ चुरियाँ मोरी २
 बैयां सुपड़ सुदार ॥ भुम्बेदार कौंभनी पहरी कटि में रही लपेटा
 मार । कड़े छड़े पाजेब लोडियां पैरन भांभन की छनकार ॥
 अनवट बिछुआ नहिर्वा सांकर जिन की शोभा अधिक अपार ।
 चटक चुँदरियां शिर पर आढ़ा वायल मोट लनी इकसार ॥
 घूमघूमारी दामन पहनी अँभियां पहनी बूँटेदार । सजि बजि
 त्वार खडो सुन्द्रादे उखल अस्त्र पर हुई सवार ॥ दूबे घोड़ा के
 ऊपर भट बड़ा लिया पूरन सरदार । जित में पड़ी जमात नाथ
 की उत में चली बढ़ाय तारा ॥ सात हजार फौज और जाफत
 की सामग्री ताके सङ्ग ॥ यहाँ का भाते झाड़ यहाँ पर अब चलन
 का सुनौ बयान । बैठे जोर जमाल सकल मिल रहे खुशी से
 बिजिया छन ॥ पी पी भांग चरम की चिलमें फूंक मचाथी
 धूँआ धार । करे धौल चपरी आँव में लालो देकर हँसे अपार ॥
 आयी नशा भांग माजे का सुरल हेराये सब के नैन । लकड़-
 नाथ से अकड़नाथ तब हँस कर लागे ऐसे कैन ॥

अकड़नाथ का

दो०—बीश लकड़नाथ तू, बड़ी अकल का खान ।

हम सब के ऊपर तैरा, है भारी अहसान ॥

चौ०—है भारी अहसान अकलबर कोई न तेरी सानी ।

खुब निकाली अकल दिया मरवा पूरन अमिमानी ॥

उस के रहते धार इवार थी हम सब की जिंदगानी ।

भगड़ा मिटा वही कंटक था करता राज कहानी ॥

दो०—मगर एक सन्शय हमको । सुनाऊँ सच्ची तुम को ॥

जुप्त चालाक बड़ा है ।

बच आया जिन्दा तो फिर वह भगड़ा करे खड़ा है ॥

लक्कड़नाथ का

दो०—भकड़नाथ भाई मेरे, छोड़ी रज्ज मलाल ।

जिन्दा बच सक्ता न वह, है किस तरफ खयाल ॥

बो०—करते ऐसा खयाल आप की है बिलकुल नादानी ।

जीवत छोड़ै नहीं सन्त को वो सुन्द्रादे रानी ॥

है खूँ रेजा सख्त दिल पापिन रहम न दिल में लानी ।

मरवा दिवा होय कब का उस ने पूरनमल ज्ञानी ॥

दो०—फिकर दिल से हटाइये । खयाल भाई न लाइये ॥

चाल क्या चल सक्ता है ।

रिन्दों के फन्दों से अरु क्या सहज निकल सक्ता है ॥

कवि का

दो०—इधर इस तरह जोगिधा, गप्पें रहे उड़ाथ ।

सुन्द्रादे का तब तलक, लश्कर पहुँचा आय ॥

लक्कड़नाथ का

दो०—देखौ र ती अरे, जरा इधर कर ध्यान ।

पूरब से आवै चला, ये कैसा तूफान ॥

थि०—देखौ र कर के ध्यान । भाई ये कैसा तूफान ।

यहाँ पर गया यकायक आन । उड़ती धूर र धूर ॥

सोटानाथ का

थि०—तू ती हुआ नशे में चूर । जिस से उड़ती दीखै धूर ॥

कर के सोच फिकर सब दूर । बोली राम र राम ॥

बिहोटीनाथ का

थि०—जावै राम नाम सब मूल । क्या तू रहा गधा सा फूल ।

तुम्ह को अत्रल न नामाकूल । होजा जुप जुप जुप ॥

लकड़नाथ का

बि०—मत कर माली और गलौज । सारी भूल जाइना मौज ।
भाई सुन्द्रादे की फौज । यहां से भान भान भान ॥

भंगोटानाथ का

बि०—हैं हैं ऐ मेरे भनवान । ये क्या आफन पहुँची ध्यान ॥
धिर गए जङ्गल के दरम्यान । जावें प्रान प्रान प्रान ॥

बिलौटानाथ का

बि०—भाई वह पूरन मक्कार । कह गया होना मरती बार ।
है वहां साधू तीन हजार । सब की मार मार मार ॥

भंगोटानाथ का

बि०—बेशक पूरन ही का काम । दीना बतला मेद तमाम ॥
अब नहीं बचै हमारी नाम । जावै जान जान जान ॥

लकड़नाथ का

बि०—भामौ २ करौ न देर । करना ये बातें सब फेर ॥ बरना
लेंह सिपाही घेर । देंगे मार मार मार ॥

कवि का

दो०—बेला मोरखनाथ के, दहशत दिल में मान ।
दण्ड कमण्डल छोड़ सब, भंगे बचा कर जान ॥

बौ०—भंगे बचा कर जान पड़े रहे कूँड़ी और मञ्जोटा ।
साफ़ी बिलम चीमटा भोली गुदड़ी कम्बल सोटा ॥
डर के मारे कोई कोई तौ फिर वही पर लोटा ।
निकल गया पेशाब मीम कितनों के गए लंगोटा ॥

दौ०—बैठ रहा कोई खटके । कोई झाड़ी में सटके ॥
चढ़ा ऊपर कोई बट के । कोई कूआ में लट के ॥
खोह में छिपे सपट के ।

पूरनमल से सखुन सुन्दरा कहने लगी दपट के ॥

सुन्द्रादे का

दो०—पूरनमल तूने बली, चाल हमारे सात ।

कोई न दीखै वहाँ पर, बतला कहाँ जमात ॥

पूरनमल का

दो०—चाल न कुछ मैंने चली, कही ठीक ही बात ।

देख तुम्हारी फौज को, छिप गई सकल जमात ॥

चौ०—छिप गई सकल जमात पहाड़ों की खोपों में जा के ।

थोड़ी देर पेशवर वहाँ सब गँव रहे उड़ा के ॥

अभी २ में गायब हो गये गुरु भाई डर खाके ।

फकत रह गई कुटी गुरु की सो वह रही दिखाके ॥

दो०—हुट गए छक्का सब के । भ्लाड़ियों में जा दब के ॥

कौन मरने को आवै ।

जब तक वहाँ पर रहै फौज नहीं सुरत कोई दिखावै ॥

कवि का

दो०—सुन कर पूरन के बचन, मन में गुस्सा खाव ।

सुन्द्रादे ने फौज को, पीना हुकम सुनाव ॥

सुन्द्रादे का

दो०—सुनों शूर सब ध्यान दे, करौ न पलकी देर ।

इस जङ्गल और खेत को, चौतरफा लो घेर ॥

चौ०—चौतरफा लो घेर फेर जाओ पहाड़ पर चढ़ के ।

जो कोई साधू मिलै छिपा कहीं लावा उसै पकड़ के ॥

दाब धौंस से काम लेउ जो आवै पेश अकड़ के ।

‘मारौ मती जान से कल लो सुरके’ खूब जकड़ के ॥

दो०—ये जङ्गल देखो भालौ । वक्त नाहक मत टालौ ॥

खोज कर सबै निकालौ ।

बाकी रहै न एक जोगिया तीन हजार सम्हालौ ॥

कवि का

दो०—सुन्द्रादे का हुकम सुन, तनक न कीनी देर ।

जङ्गल को चौतरफ से, छिपा कटक ने घेर ॥

चौ०—छिया कटक ने घेर फेर इत उत को शूर सिधारे ।

खोह झाड़ियों से कूपों से साधू पकड़ निकारे ॥
 बाकी छोड़ा एक न पूरे तीन हजार सम्हारे ।
 गिरफ्तार कर अब को लो रानी की नजर गुजारे ॥
 दौ०—देख रानी साधुन को । बुलाया दिन पूरन को ॥
 राजव गुस्ता कमाज कर ।

लगी डराने सन्तों को यों आखें लाल लाल कर ॥

सुद्रादे का

दौ०—क्या तुमको मालुम न था, जो है यहां का रूल ।
 मेरे शहर की हद् में, साधू रहै न भूल ॥
 चौ०—साधू रहै न भूल भूल कर अमर कोई यहां आवे ।
 वा कायदे हुकम सरकारी सर अपना कटवावै ॥
 उसी मुताबिक तुम सबको अब कत्ल करावा जावै ।
 तीन हजार जोगियों में से एक न बचने पावै ॥
 दौ०—एही हरशाह हमारा । होय सर' कत्लम तुम्हारा ॥
 जो चाही खिजा पिलादें ।

जिससे मिलना चही उषे फौरन इस वक्त मिलादें ॥

सोटानाथ का

दौ०—हम सब जोगी वे बतन, कीजै माफ हुजूर ।
 हद् आपकी में टिके, बेशक हुआ कसूर ॥
 चौ०—बेशक हुआ कसूर जो हम सब आए चले इधर को ।
 हम में से भिद्या करने नहीं कोई गया शहर को ॥
 फिर क्यों कर सरकार करावौ कत्ल हमारे सरको ।
 माफी दो हम चले जाय नहीं आवें नजर फजरको ॥
 दौ०—छोड़ अब हमें दीजिये । न ज़्यादा तज़ कीजिये ॥
 चले यहाँ से जावें हम ।
 कसम गुरूको इस जङ्गल में कभी न फिर आवें हम ॥
 सुद्रादे का
 दौ०—गुजरिम हो के सरासर, झूठ करौ इजहार ।

माफ़ी कभी न द' तुम्हें, ही सब तुम मक्कार ॥

बौ०—हो भारी मक्कार झूठ इजहार सुनाया तुम ने ।

किया जुर्म दर जुर्म खीफ दिल बीष न खाया तुमने ॥

दे ताना भिन्ना को पूरन सन्त पठाया तुम ने ।

जान सरासर अजल जाल वहाँ इसे पठाया तुम ने ॥

क्र०—दशा से सर कटाने को जिसे तुमने पठाया है । वही

पूरन मए लश्कर लिवा यहाँ सुभको लाया है ॥ शकल में

शान में गुप्तार में गुप्तार में यकता । एक दो की न दस

की बात दल का दल बंताया है ॥ आज परताप पूरन के

बिना महन्त परिश्रम के । इकट्ठे सर कटाने का ये मौका

हाथ आया है ॥ फंसाना और को चाहा फंसे खुद आप फन्दे

में । कजा का मौत का चक्कर सर्वो के सर पै छांया है ॥ जो

खोदै और को कूभा उसी को तयार हो खाई । किसी शायर

ने कबि ने ठीक यह मिसरा बनाया है ॥ तयार मरने को हो-

जाओ कराऊं कज्रम सर सब का । बही करने का ईश्वर ने

मजा तुमको चखाया है ॥

कवि का

दो०—सुन्द्रादे के सुन सखन, जोगी दहशत मान ।

करन लगे सब खुशामद, पूरन के दिग आन ॥

जोगियों का

दो०—पूरनमल हम सर्वो पर, कर भारी अहमान ।

सुन्द्रादे खुर्रेज से, बचा हमारी जान ॥

बौ०—है तेरे शक्यार सर्वो की जान बचादे भाई ।

इस जालिम के फन्दे से आजाद करादे भाई ॥

कर मिन्नत पर गौर क्रैद से हमें छुड़ादे भाई ।

खता हमारी का दिल से कुल खयाल हटादे भाई ॥

दो०—तेरे हम गुनहगार हैं । बिजाशक खतावार हैं ॥

ये अहसां हम पर कीजे ।

करें न बदी तुम्हारे सङ्ग फिर अब तौ छुड़वा दीजे ॥

पूरनमल का

दो०—कसर नहीं तुमने रखी, कुछ भी मेरे साथ ।

मेजा भरने को मुझे, मिल के कीनी घात ॥

बौ०—मिल के कीनी घात कहन का तान तमञ्चा मारा ।

गुरु भाई होकर के मेरे सङ्ग में कपट विचारा ॥

सुन्द्रादे के हाथ कटाना चाहा शीश हमारा ।

बच आया मैं साफ मनोरथ हुआ न सफल तुम्हारा ॥

क०—वही सुन्द्रा है ये जो कत्ल फौरन सर कराती थी ।

न जिन्दा छोड़ती थी सन्त को गर देख पाती थी ॥

गुरु दर्शन को अब वह ही मेरे हमराह आई है ।

सहित श्रद्धा जिमावन को विविध पकवान लाई है ॥

दो०—न मन में दहशत खाओ । खुशी से भोजन पाओ ॥

न कुछ मैं तुमसा हूँगा ।

करो बदी चाहे जैसी तुम मैं नहीं दगा करूँगा ॥

कवि का

दो०—पूरनमल ने सबों को, करा दिया आजाद ।

बलो पास फिर गुरु के, हो तबियत में शाद ॥

बौ०—हो तबियत में शाद साथ सुन्द्रादे को भी लीना ।

जहाँ थी कुटी नाथ की वहाँ प्रस्थान दोउन ने कीना ॥

पहुँच गुरु के पास शीश रख चरण कमल में दीना ।

बिसरा ध्यान तुरत गोरख कः तरफ इन्हों की चीन्हा ॥

दो०—निरख चेला पूरन को । प्रफुल्लित कीया मन को ॥

साथ रानी को देखा ।

लगे पूछने पूरनमल से कर दिल बीच परेखा ॥

गोरखनाथ का

दो०—पूरनमल यह कौन है, औरत तेरे साथ ।

क्यों आई मेरे कर्ने, बता बात सच ठात ॥

पूरनमल का

दे०—शहर चीन की सुन्दरा, है यह श्री महाराज ।
जाफत सकल जमात की, करना चाहै आज ॥

गोरखनाथ का

दे०—ब्रतल कराये हजारों, साधू बिना कसर ।
जाफत इस कम्बखत की, हमें नहीं मंजूर ॥

बौ०—हमें नहीं मंजूर जिबाफत कोई न इसकी पावे ।
कहदो इस हरामजादी से चली यहाँ से जावे ॥
चाँडाल पापिन हत्यारी शकल न भुझै दिखावे ।
सुन २ इसका नाम गुजरती नफरत गुस्सां आवै ॥

दौ०—साधुओं को मरवावे । रहम नहीं दिल में लावे ॥
पाप करती अति भारी ।

भोजन करें हाथ इसके का कभी न मुनि तपधारा ॥

कवि का

दे०—क्रोधित गोरखनाथ को, लखि सुन्द्रा कर जोरि ।
शीश नाइ कर चरण में, बोली बचन निहोरि ॥

सुन्द्रादे का

दे०—स्वामी मेरे से बना, बेशक भारी पाप ।
हृदय मेरे को हो रहा, महा घोर सन्ताप ॥

का०—सन्ताप हो रहा स्वामी मेरे मनको । मैं आई हूँ तुम
चरणन के दर्शन को ॥ महाराज कृपा मो पापिन पर कीजे ।
प्रायश्चित्त हो मेरे पाप का अमय दान दीजे ॥ मो हूर्मति
से दुष्कर्म हुए प्रभु भारी । बिन खता हजारों मरवाए तपधारी ॥
महाराज प्राद कर पाऊं महा कलेश । होय बुरा उस पंडितका
दीना जिन यह उपदेश ॥ वह ग्योतिष विद्या पढ़ काशी से
आया । उन मार्ग मुक्ति का स्वामी वही बताया ॥ महाराज
कही साधुन को मरवाओ । है वृत्ति उत्तम सब से तुम शीघ्र
मोक्ष पाओ ॥ यह कहन ठीक यों पंडित जी की मानी ॥

परन तीसरा

बुरबाये साधू करी बड़ी नादानी ॥ महाराज भिला नहि अब
क कोई महन्त । हटा कुमारम से दिखलाता जो प्रभु मुकै
दुपन्थ ॥ बड़ भाग मेरा जो हुआ आषका आना । और परन
मम ग्रह भिला को जाना ॥ महाराज ले भिला दूर किया
मझान । दरश कराया तुम चरणन का कर के कृपा महान ॥
अब चमा मेरा अपराध कीजिये स्वामी । सेवा अपनी में मुझ
कीजिये स्वामी ॥ महाराज फूल फल मेट करी स्वीकार । कृपा
मापकी से होवै प्रभु मेरा बेड़ा पार ॥

कवि का

दो०—सुन्द्रादे का प्रेम युत, भक्ती भाव निहार ।

स्वामी गोरखनाथ ने, करी मेट स्वीकार ॥

वौ०—करी मेट स्वीकार शिष्य चौदह सा निकट बुलाए ।

जा थे गुप्त संत चौदह सौ सो भी सब प्रगटाए ॥

बिर्वाधि भाँति पकवान चीन वासी आतुर ले आए ।

सहित जमात नाथ को सुन्द्रा भोजन रुचिर जिमाये ॥

दौ०—हुआ पूरा भयङ्ग्रा । करे सब जब २ कारा ॥

गुरु गोरख हरषाये ।

सुन्द्रादे रानी का खुश हो ऐसे बचन सुनाये ॥

गोरखनाथ का

दो०—सुन्द्रादे ऊपर तेरे, हुआ प्रसन्न महान ।

मन इच्छा पूरा करूँ, माँग २ वरदान ॥

क०—लखि भक्ति भाव तेरा, खुश हूँ अपार बेटी ।

क्या चाहती है वर तू, मुख से उचार बेटी ॥

सुन्द्रादे का

क०—काबिल न माँगने के, प्रभु ने किया है मुझको ।

धन धाम राज्य वैभव, सब कुछ दिया है मुझको ॥

गोरखनाथ का

क०—वेशक न माँगने के, काबिल किया है तुझको ।

जाजिम है कुछ न कुछ तो देना जरूर मुझको ॥

सुन्द्रादे का

क०—दीना जरूर है तो, मांगू नहीं मिले फिर ।

दीजे बचन गुरुजी, हरगिज्ञ नहीं टले फिर ॥

गोरखनाथ का

क०—दीना बचन गुरुजी, हरगिज्ञ नहीं टलेगा ।

मांगैगी जो तू बेटी, फौरन वही मिलेगा ॥

सुन्द्रादे का

क०—दीना बचन गुरुजी, तो देर अब न कीजे ।

निज शिष्य मन्त पूरन, बहिःशश में मुझ दीजे ॥

गोरखनाथ का

क०—घोखा हमारे सङ्ग में, कीना कमाल तू ने ।

जानो जिगर कलेजा, लीना निकाल तू ने ॥

सुन्द्रादे का

क०—कीनी प्रतिज्ञा जो कुछ, स्वामी उसे निभाओ ।

मत मोह जाल में फँस, निज सत्य को डिगाओ ॥

गोरखनाथ का

दो०—बचन कभी टारू नहीं, दीना पूरन तोय ।

लेकिन इसके साथ में, अनुचित कार्य न होय ॥

चौ०—अचित कार्य न होय शिष्य मम बाल बृद्धवारी है

बनै न कभी कुमार्ग धर्म धारी है सत धारी है ॥

तू कामिन छल भरी मदन के मद में मतवारी है ।

रखै किस तरह चेला को सन्देह यही भारी है ॥

दो०—सुने तू पूरन चेला । न कर अब जरा झमेला ॥

साथ रानी के जाओ ।

नथाराम द्विज कहैं इसे उत्तम उपदेश सुनाओ ॥

पूरनमल का

दो०—जो कुछ आज्ञा नाथ की, है मुझको स्वीकार ।

जाऊँ इसके साथ में, करूँ नहीं इनकार ॥

कवि का

दो०—सुन्द्रादे मन मनन हो, ले पूरन को साथ ।

चली आपने शहर को, मारम में बतरात ॥

श्री०—मारम में बतरात जात हँस २ कर हसिकाती है ।

मारै बान तान चरमों के रानी मदमाती है ॥

नाज अदा अन्दाज सन्त पूरन को दिखलाती है ।

कर छल फन्ड अनेक जाल मनमथ का फैलाती है ॥

दो०—महल अपने में आई । न फूली अङ्ग समाई ॥

जिगर की घुण्डी खोली ।

पकड़ हाथ में हाथ मखन पूरन से ऐसे बोली ॥

सुन्द्रादे का

दो०—गोरख गुरु ने कर दिया, तुम्हें मेरे हमराह ।

अब तौ भोगी राज सुब, हो कर शाहन्शाह ॥

श्री०—होकर शाहन्शाह वीन का राज करौ वे खटके ।

बहुत रोज जञ्जाल जोग में जङ्गल २ मटके ॥

करी ऐश आराम यहां पर गुलन्दाम डट डट के ।

देखी दिलवर जरा हरक बाजी के सुन्दर लटके ॥

दो०—बनम नहीं देर कीजिये । मुझे ऋतु दान दीजिये ॥

घड़ी युग सम कटती है !

किया मदन ने जोर न तबियत डाटे से डटती है ॥

पूरनमल का

दो०—बस २ बस खामोश रह, रख जबान को थाम ।

हरमिज मेरे से नहीं, होगा ऐसा काम ॥

श्री०—होगा ऐसा काम न ये त्रिकरा जबान पर लाना ।

गुलन्दाम फेबो हराम का जिकर न मुझे सुनाना ।

काम हमारा है सब को मुक्ती का मार्ग बताना ।

जावें पार आप मव से आरोँ को पार लगाना ॥

दो०—हुई रानी दीवानी । अकल कहीं तेरी बुलानी ॥

काम के बस होती है ।

झारा देर सुख कारण अपना धर्म कर्म खोती है ॥

सुन्द्रादे का

दो०—तनक देर सुख के लिए, पावत कष्ट महान ।

तब मुश्किल से मिलत है, यह सुख रस की खान ॥

बहरत०—बड़ी मुश्किल से मिलता है ये सुख सनम, इस के आगे कोई सुख सुहाता नहीं । भाग्यशाली ही भोगे हैं इस भोग को, कोई बिन भोग आनन्द पाता नहीं ॥ भोग को जोगी करते हैं जब तप-भजन, तू गले से मुझे क्यों जमाता नहीं तेरी भिन्नत लुशामद करूँ हूँ सनम, तौ भी दिल में मेरा रहम लाता नहीं ॥

परनमल का

बहरत०—कैसे लाऊँ रहम तेरा दिल में बता, ऐसा जिकरा मुझे अब सुहाता नहीं । मैं बताता हूँ मारग तुझे मुक्ति का, सो समझ में तेरी कुछ भी आता नहीं ॥ भोग भोगें हैं भोगी न जोगी जाती, भोग कर जोग अपना डिजाता नहीं । तू हुई काम के बस फँसे पाप में, तेरे सँग में फँसा मुझ पै जाता नहीं ॥

सुन्द्रादे का

बहरत०—मैं तुम्हें मांग कर गुरु से लाई यहाँ, अब रहे कैसे जोगी बताओ सनम । तुमको करनी पड़े मेरी राजी सभी, मत बहाने की बातें बनाओ सनम ॥ दो पटक भाड़ में ऐसा ज्ञानो धरम, रस की बातें इमें बस सुनाओ सनम । बलौ लेटौ लिपट प्यार से सेज पर, मेरे दिल के दरद को पिटाओ सनम ॥

परनमल का

दो०—अच्छा २ समझली, मन तेरे की बात ।

सुन्द्रादे तुझ से मेरी, पार नहीं बसियात ॥

छं०—नहीं पार बसियावै मेरी रानी शरम की बात है ।

जोगी हूँ मैं बस इस सबब तन मन मेरा बर्रात है ॥

कर नैन अपने बन्द तू इच्छा सकल परन करूँ ।

मत हो दुखी मत हो दुखी मैं पीर सब तेरी हक ॥

कवि का

श्री०-कीनी आँखें बन्द त्रिष, कहा सनम का मान ।
पूरनमल भट वहाँ से, होगया अन्तर ध्यान ॥

श्री०-होकर अन्तर ध्यान, आया गुरु के पास में ।
चेला को पहचान, बोले गोरखनाथ धों ॥

गोरखनाथ का

दो०-सुन्द्रादे को दे दिया, मैंने तुम्हको दास ।

छोड़ उसै क्यों आगवा, फिर तू मेरे पास ॥

श्री०-फिर तू मेरे पास चला आया नहीं कौल निभाया ।

चाह तेरी में सुन्द्रादे ने भारी दुक्ल उठाया ॥

जैसे तैसे मुरिकल से पूरनमल तुम्हको पाया ।

रज जुदाई का फिर तने चेला उसै दिखाया ॥

क०-मुनासिब पास मेरे अब तुम्है पूरन न आना था । वहाँ रह

के सद उपदेश रानी को सुनाना था ॥ हजारों जीवियों

को बत्ल करवाया था कटवाए । ज्ञान शिचा दे सुन्द्रादे का

तुम्हको लुढ़ाना था ॥ वो तेरी चाह में दिलजान से मशगूल

हती थी । तसल्ली उसको समझी के तुम्है बेटा बंधाना था ॥

दो०-रहम लाना अच्छा है । न कलपाना अच्छा है ॥

किसी को कलपाओगे ।

फल पाओ कलपाने का नहीं तुम भी कल पाओगे ।

पूरनमल का

दो०-स्वामी अपनी टहल से, मुझ दास को निकाल ।

सौप अधरभिन को दिया, किस ववाल में डाल ॥

श्री०-किस बवाल में डाल दिया नित आफत सहनी परती ।

पाप कर्म से सुन्द्रादे गुरु तनक न मन में डरती ॥

साथ हमारे विषय भोग की जिकर हमेशा करती ।

सुन र ये बातें रानी की नफरत मुझै गुजरती ॥

क०-मुनासिब साथ ऐसी के नहीं मुझको पठाना था । तरस

कर दास अपने को कुमारन से बचाना था। जती या जन्म को महाराज कुछ तो ख्याल लाना था। कर दिया साब पापिन के बुझे क्या आजमाना था ॥ नसीहत बहुत कुछ की और दिवा उपदेश दुर्मति को। रंगी वह रंज रतिपति के कहा मेरा न माना था ॥ गुजारा था न वहां मेरा चला आया हं दे घोका। न रह के पास रानी के धरम अपना डिमाना था ॥

दौ०—काम बस हुई दिवानी। नसीहत मेरी न मानी ॥
न हो वहां मेरी गुजर है।

सुन्द्रादे की गुरु तरफ मेरी को बुरी नजर है ॥

गोरखनाथ का

दौ०—पूरनमल तू ने कुमर, किया न अच्छा काम।
घोखा रानी को दिवा, होय बुरा अज्जाम ॥

चौ०—होय बुरा अज्जाम ख्याल मन सुन्द्रादे लावैगी।
दगा बाज छलिवा कपटी वह बुझको बतलावैगी।
तेरी जुदाई का दुख पाके रानी मरजावैगी।
जिन्दी रहे अधर्मिन मर सन्तों का कटवावैगी ॥

दौ०—पास उस के ही जा तू। बिलम मत पहा लगा तू ॥
कष्ट उन भारी शैला।

सुन्द्रादे मरजाय दोष लमजाय बुझे फिर चेला ॥

पूरनमल का

दौ०—अगर तुम्हें मंजूर था, बुझै कराना मोन।
तौ फिर स्वामी आपने, क्यों सिखलाया जेन ॥

चौ०—सिखलाया गुरु जेन पाप रानी बुझ से तकती है।
जोश जवानी में दीवानी ने लिहाज बहती है ॥
ख्वाहिश मेरे साथ वस्ल की सुन्द्रादे रखती है।
नहीं दास से इच्छा उसकी पूरी हो सकती है ॥

क०—नहीं गुरु कर्म है अपना पेश अशरत उड़ाने का। काम

पूरन तासरा
 महाराज सन्तो का भजन में लौ लगाने का ॥ ध्यान हरि-
 नाम का घरना यही हर वा बतलाया । भोग करना न हम
 को आपने जिनहार बतलाया ॥ सितम है जोग लुडवा भोग
 के फन्दे फँसाते ही । सुमारग से हटा स्वामी कुमारग में
 बसाते ही ॥

दो०—न जाऊँ वहाँ भूल मैं । करूँ मरना कबूल मैं ॥

कृपा यह हम पर कीजै ।

यह आज्ञा महाराज दास अपने को आप न दीजै ॥

कवि का

दो०—पूरनमल गोरख दोऊ, रहे इधर बतराय ।

रानी सुन्द्रादे उधर, निरी महल गश खाय ॥

सोरठा—बाँदी झटपट आइ, लीनी उसे उठाय कर ।

इत्र गुलाब सुँवाइ, होश करा कहने लगी ॥

बाँदी का

दो०—क्यों गश खा कर के निरी, कहिये आप हुजूर ।

भरी आइ उफ़ सरद क्यों, बिगड़ गया सब नूर ॥

चौ०—बिगड़ गया सब नूर रोशनी क्यों चहरे पर कम है ।

सरत पर छानई कदरत क्या गम रज्ज अलम है ॥

हाश हवास न ठीक भरी सरकार आइ थम र है ।

क्या दिल दर्द जर्द रज्ज होगया चश्म अश्क से नम है ॥

दो०—हाल दिल का बताइये । न बन्दो से छिपाइये ॥

हुई हालत खराब क्यों ।

किस बाइस रोती हो होती ही गमगीं जनाव क्यों ॥

सुन्द्रादे का

दो०—ऐ बाँदी क्या बताऊँ, दिल अपने का हाल ।

पूरनमल गायब हुआ, दे कर मुझ को चाल ॥

सौ०—दे चाल पूरनमल मुझै यहाँ से खाना होगया । अब मुझै
 दिलदार का दुश्वार पाना होगया ॥ या यकी कम्बलतके अब सज्ज

दिन गारत हुए । उम्मेद ही उम्मेद में उलटा जमाना होगया ॥
 ये ग़ुबाल या मुतलक नहीँ दिलजान हो मुझ से जुदा । पे
 मेरे भगवान यह वैसा प्रिसाना होगया ॥ सोचती थी रात
 दिन गुजरेगे अशरत ऐश में । ऐश के बदले बहन आँस
 बहाना होगया ॥ जान बिन अब जान दंगी ठान पिल दर-
 म्यान ली । बस खतम जग से मेरा अब आबदाना होगया ॥

बाँदी का

दो०—गरक इरक में इस कदर, हुईं आप सरकार ।

जान गमाओ खामखा, करौ न जरा बिचार ॥

दा०—सबर कर दिल दरम्यान भैना । प्यारी ठान न ऐसी
 ठानी, कहन सब मानी ॥ बनौं हौ कयो नादान भैना ॥
 सबर० ॥ कयो तू बृथाँ बिकल होती है । पढ़ी रोती है ॥ हुई
 ऐसी खफकान भैना ॥ सबर० ॥ जोमी किस के सगे बतारी ।
 हुए हैं प्यारी । काहे खोती हौ जान भैना ॥ सबर० ॥ या
 जादूगर वह जाली । तुम्हे बहकाली ॥ थी कब उस की
 पहचान भैना ॥ सबर कर दिल दरम्यान भैना ॥

सुम्दादे का

दा०—करूं मैं कथा तदवीर बाँदी । घोखा देके मुझ सिधारा।
 वो फूल हजारा ॥ बना ऐसा बे पीर बाँदी ॥ करूं ॥ अब मैं
 कैसे मन समझाऊं । न उसको पाऊं ॥ मेरी आँखी तकदीर बाँदी।
 करूं० ॥ अच्छा नहीं उमर भर रौना । ज़हर खा सेना ॥
 यही बहतर हमशीर बाँदी ॥ करूं० ॥ आली सब भुनड़ें
 निबटाऊं । मैं जान गमाऊं ॥ मार मल में तलवार बाँदी ॥ करूं०

बाँदी का

दो०—बैठ महल चुपचाप अब, भान हमारी कैन ।

टलनी नहीं शुहनी अमर, लाख जतन कर भैन ॥

भजन—अब कुछ जतन बनै न मेरी भैना । चाहै तजि दे प्रान
 खाय दे चाहै रो र नैना ॥ पूरनमल तो जन्म जती है भैन

पूरन तीसरा

तुम्हारे फंद फँसै ना ॥ अब० ॥ जो कुछ लिखा भाज तेरे में
चाहि कोई मेट सकै ना । पूरनमल संग बही न जूरी, कर तू
लाख उराय मिलै ना ॥ अब० ॥ अन्न खाउ जल पियौ सार
कुछ इन बातन में है ना । मन में धोरज धार बहन तू, प्राण
तजै कोई काज सरै ना ॥ अब० ॥ सुन्दर सुघड़ हँसीन कोई
वर देख सहेली लेना । निर्मोही साधू के ऊपर, हरगिज मैना
अपने प्राण न देना ॥ अब० ॥

सुन्द्रादे कः

दा०—कैसे मानू कहना बहना दिल को बँधै न मन्न करार ।
मैना बिन उस पूरनमल के दिल को सवर बँधैना । लैना समझ
सहेली सच अब मेरे प्राण बँधैना हूँ मरने को मैं तैयार ॥
कैसे मानू कहना बहना० ॥

बाँदी का

दा०—मानों र राज हुलारी क्यों तुम बनती हो नादान ।
ठानी ठान हय कदर मैना बनी इस्क दीवानी । रानी रुसवा
होय जहाँ में डाटो जोश जवानी ॥ क्यों बनती हो पामल
खफवान । मानों० ॥

सुन्द्रादे का

दा०—अगर न मिलै मेरा हमदम, मरने में नहीं कसर है ।
मुझे नहीं डर रुसवाई का रखा हथेली सर है ॥ अब क्या जीने
में है सार ॥ कैसे० ॥

बाँदी का

दादरा—सुन्द्रादे अब मिलै न पूरन बेशक प्राण ममाटे । ना
दे कोई भलाई आली दिल से ख्याल हटादे ॥ रुसवा होय
जहाँ दरम्यान ॥ मानों० ॥

सुन्द्रादे का

दादरा—जानै मति धायल की धायल दीगर क्या पहचानै ।
ताने दे दे कर तू मुझ को बाँदी लमी खिजाने ॥ तेरा कहना
है बेकार ॥ कैसे० ॥

बहरत०—हो दिवानी जवाजी में रानी मेरी, ऐसी टानी कि जिस का ठिकाना नहीं। मानो मेरी कही ना अमानो बनौ, रुसवा दुनियां में अच्छा कराना नहीं ॥ चाहे फज्जीहत करौ जा से भैना मरौ, ऐसी बातों में कुछ हाथ आना नहीं । जो गया सो गया अब वो आकर वहां, तेरे रज्जो अलम को मिटाना नहीं ॥

सुन्द्रादे का

बहरत०—जो वो आया नहीं तो ठिकाना नहीं, जां ममा हंगी भूँठा बर्हाना नहीं । रहूँ जिन्दी तो भागी मुसीबत सहूँ, मुझै दुनियां हंसाई कराना नहीं ॥ तू तो कहती है मेरे भले की बहन, लेकिन मानै है ये दिल दिवाना नहीं । दिल की मानूँ तो होवै फज्जीहत मेरा, माऊं सुख नींद ऊकै जमाना नहीं ॥

काब का

दा०—सुन्द्रादे की मात सुन, गम की भरी पुकार ।
आ बेटी के पास यों, करन लगी गुफ्तार ॥

माता का

दा०—क्या गम रंज सवार है, सुन्द्रादे सुकुमार ।
हालत तेरी निहार के, छूटा सब करार ॥

ची०—छूटा सब करार फिर मेरे दिल को भारी है ।
रीनक बदन तेरे का बेटी बिगड़ गई सारी है ॥
हुषा जर्द रङ्ग चहरे का उफ़ आह सदै ज़ारी है ।
कहदे दिल का हाल लगी क्या तुझको बीमारी है ॥

दा०—तेरी हालत खराब है । न तन में ज़रा ताब है ॥
हाल सब मुझै बतारी ।

कब से और किस सबब लगी क्या बीमारी सुकुमारी ॥

सुन्द्रादे का

दा०—क्या बतलाऊं मैं तुझै, अपने दिल का हाल ।
चन्द रोज में लग गया, मुझै हरक जञ्जाल ॥

बौ० लजा इश्क ज जाल मात अहवाल सुनाऊं सारा ।

स्यालकोट नृप का है सुत परनमल फूल इकारा ॥

उस रुक अनवर शम्श कमर से एक दिन हुआ नज़ारा ॥

फँसी इश्क के फन्द उसी पर है दिल फिदा हमारा ॥

क्र०—देख उस गुल को फिसाना होमया । दिल मेरा बुलबुल
दिवाना होमया ॥ दिल दिया दिलवर किया दिल से उसै ।
दिल में दिलवर का ठिकाना होमया ॥ बर चुकी उस का परन
ये कर चुकी । ध्यान प्रीतम से लगाना होमया ॥ ये खबर पाई
कि पति जोगी हुए । बस तमी से दुख उठाना होमया ॥ कत्ल
करवाये जो कपटी सन्त थे एक दिन उन का भी आना होमया ॥
मार्ग गोरखनाथ से लाई महल । क्रुद दिल इसरत मिटाना
होमया ॥ अन्द दिन यहाँ पर रहा परन सनम । हा यकायक
ही रवाना होगया ॥ एक उस गुल के बिना बागे जहाँ । है खिजा
पुनो जमाना होमया ॥ मुझ मरीजे इश्क का मादर मेरी । बस
खतम अब आबदाना होमया ॥

माता का

दो०—अरे डाकिनी तनक सी, करै गज़ब की बात ।

दीवानी हो इश्क में, बकै न गौरत खात ॥

ला०लं०—करती बह गुफ्रतार खौफ बदनामी का नहीं खाती
है । इतराती है उड़ी बे पर अनवर को जाती है ॥ कहती कुफ्र
कलाम मेरे आगे तू नहीं शरमाती है । बौरानी है सुनाती मुझ
को इश्क कहानी है ॥ न कुछ अक्त में तुझ अनौखी बेहा चढी
जवानी है । मस्तानी है भिखमङ्गा पर होगई दिवानी है ॥ हया
शरम को छोड़ साधुओं को हा कन्थ बनाती है ॥ इतराती० ॥

सुन्द्रादे का

ला०हं०—आँखों में तसबीर उसी पानमल का लहगती है ।
समझाती ये नसीहत मुझ को नहीं सुहाती है ॥ बिन उस हम-
इम शम्श कमर के बंधे न दिल को सत्र करार । नज़ार न

आवें सब तरफ देखूं उसे निहार निहार ॥ गमे जुदाई में दी-
वानी बना मया मुझ को दिलदार । हया शरम का न मोदर
हुतलक दिल में किया बिचार ॥ है वह स्यालकोट नृप का
सुत जोनी जिसै बताती है ॥ समझाती० ॥

माता का

दो०—अरे छोकड़ी तनक सी, करती बंद गुप्तार ।

दिल दीना मिखमैना को, सब कुल कान बिसार ॥
बहरत०—ऐ तनक सी अभी से गुजाग गज़ाब, बवारेपन में ही
दिल को फंसाया तैने । तू जवानी में ऐसी दिवानी हुई, नीच
जोनी को हमदम बनाया तैने ॥ अब दर्ई डोब मा बाप की
सब शरम, औ बुजुर्गों को बट्टा लगाया तैने । हुई पैदा तू ऐसी
मेरे बेहवा, हा ज़माने में रुसवा कराया तैने ॥

सुंदरादे का

बहरत०—ऐरी मादर तू जिस को कहै मिखमैना, तुम्हें उस के
वतन की खबर ही नहीं । वो है राजा का सुत बृहचारी जती,
उस बशर की तू जानें क्रदर ही नहीं ॥ मैंने देखे हैं लाखों ही
नर नौजवां, आया ऐसा हसीं कोई नजर ही नहीं । जब से हमदम
हमारा दगा दे मया, तब से होता है दिल को खबर ही नहीं ॥

माता का

बहरत०—मुझ बड़ी बूढ़ी का भी न करती अदब, बेहवाई से हा
पेश आने लगी । ओ तनकसी अभी से करै है सितम, तू दुपहरी
में तारे खिलाने लगी ॥ वे खतर शर्म सारी रखी ताक में, और
अंगूठे पै मुझ को खिलाने लगी । मेरे आगे तू बकने लगी
वे परद, और चिरा चुटकियों से उड़ाने लगी ॥

सुंदरादे का

बहरत०—मेरी रग २ में वह माहरू रम रहा, ना हटै एक भी पल
को दिल से मनम । उस की चाहत में मैया मैं मशगूल हूं, मुझे
रुसवा जुदाई का हुतलक न गम ॥ जो मिलैना मुझै मेरा प्यारा

हीं तौ मले पौ बलाऊंगी तेरो दुदम । बिना परन के परन
कं जिन्दगी, अम्मां तेरी कसम अम्मां तेरी कसम ॥

माता का

हरत०—तू नसीहत सुने ना फज़ीहत करै, अब तुझै सैर इसकी
दुखदंजी मैं । क्या जबानी में ऐसी दिवानी हुई, सब नशा
न ठण्डा करादंजी मैं । दूं उड़ा खाल बेंतों से सारी तेरी,
जो चाहत का तुझको चला दंजी मैं । सब मुहब्बत की बातें
ला दंजी मैं, बेहवा तेरे सर को उड़ा दंजी मैं ॥

सुन्द्रादे का

हरत०—ले ले तेरो दुदम सर को करदे क़लम, रहना जिन्दगी मुझै
की मवारा नहीं । जब निकल हाथ से गुल हजारा गया, दिले
खुल का हो फिर गुजारा नहीं ॥ मैं तौ मरने को खुद देख
चार हूं, मैया धमकाना बाजिब तुम्हारा नहीं । मुझै मारैगी
या खुद ही मर जाउंगी, जो मिलैगा वो हमदम हमारा नहीं ॥

-----१०:-----

द्वितीय मंज़िल प्रारम्भ ।

कवि का

दो०—सुन्द्रादे ने मात की, एक न मानी बात ।

परनमल की बाद में, धरणि पछारे' खात ॥

०—खाती पछारे' धरणि पर मन में रही घबराय के । नरमी
कर के बहाना पहुंची वो ऊपर जाय के ॥ जीने की तजि उम्मेद
ने की जिगर में ठान के । उपर महल से निरी आंगन में पड़ी
आन के ॥ खलि मृतक सुन्द्रा के महल में रुदन सबी मचा
। महाराज गोरखनाथ उत निज शिष्य के समझा रहे ॥

गोरखनाथ का

दो०—शौहरत हो रही शहर में, परनमल सज़ान ।

तेरी जुदाई में तजे, सुन्द्रादे ने प्रान ॥

—तजि प्राण सुन्द्रादे दिये तेरी जुदाई में कुमर । मरती न
गशा नारि बह रहना वहीं पर तू भग ॥ बह पाप अति तुझ

को लाना तू शिष्य इतना काम कर । उद्धार हो तेरा जमी वेटा तू
तीर्थ घाम कर ॥ दे २ के सद् उपदेश कर सन्सार का उपकार
तू । जाना वतन अपने को भी रहना मगर इशियार तू ॥ माता
पिता तेरे बिकल हैं धीर उनको दीजियो । छूकर चरण कर
दण्डवत जीवन सफल निज कीजियो ॥ हो बश तेरा सन्सार
में सुत कर दिया तुम्हको अमर । रहना भजन में मगन चेला
बिचरना निर्भय निहार ॥

पूरनमल को

दो०—जो कुछ आज्ञा आप की, है मुझको मंजूर ।

तीर्थ यात्रा करन को, जाऊँ गुरु जरूर ॥

छ०—मेजो जहाँ मुझको गुरु, बेशक वहीं मैं जाऊँगा ।

स्वामी तुम्हारे पद कमल के फिर दर्श कहां पाऊँगा ॥

कर तीर्थ जो माता पिता अपने के कष्ट छुड़ाऊँगा ।

दीजै पता अपना बता स्वामी वहीं आ जाऊँगा ॥

गोरखनाथ का

दो०—तीर्थ राज प्रवाग को, यहाँ से करे पथान ।

आना निस्सन्देह वहाँ, पूरनमल सुज्ञान ॥

कवि का

दो०—पूरनमल वहाँ से चला, किये तीर्थ स्नान ।

घूमत र तथा वह, स्थालकोट दरम्यान ॥

बौ०—स्थालकोट दरम्यान जाय वस्ती को खूब निहारो ।

बाग नौलखा में आ फिर पूरन ने डेरा डारा ॥

सत्ता चमन पड़ा मुहत से हरा हो गया सारा ।

काग चील चिमगादर उल्लसव कर मये किनारा ॥

क०—कृपा गुरु की से पूरनमल ने ये चेटक दिखाया है । जरा

सी देर में बीरान को गुलशन बनाया है ॥ शजर सखे पड़े थे

कुल न था वहाँ नाम सज्जो का । समर गुल बर्ग मय टहनी

हरा कर के दिखाया है ॥ जहाँ उल्लू व चीलों के भयानक

पूरन तीसरा

शब्द होते थे । वहां तोता व कौवत्र आदि की कलरव करावा है ॥ बने थे चौंसला विमणाओं कागों के डालों पर । कोयलों ने उन्हीं डालों पे अपना घर बनाया है ॥ पड़े थे खार हर तरुते व पट्टो रौम के अन्दर । सब्ज मखमल का मोया फ्रश अब वहां पर बिछाया है ॥

दौ०—सुशी माली को छाई । सुषड डाली सजवाई ॥
निकट जोमी के आया ।

रख डाली कर जोर सखुन माली महताव सुनाया ॥
महताव का

दो०—दरशन कर प्रभू आपके, भिट गए सकल विकार ।

सुदत का सुखा हुआ, किया चमन गुलजार ॥

चौ०—किया चमन गुलजार आपने अपनी महर नजर से ।

हरे भरे गुल खिले अजब फल फूले फले शजर से ॥

अज्ञामत भरे सिद्ध ही पूरे आना हुआ किधर से ।

दाज आसन डाल यहाँ लौ लगा भवरि शहर से ॥

दौ०—अजब चेटक दिखलाया । चमन गुलजोर बनाया ॥

आप ही सत गुरु स्वामी ।

शौकत शान शकल पूरनमल को सी अन्तरयामी ॥

पूरनमल का

दो०—माली के ये क्या करे, बेहूदी गुफ्तार ।

को पूरनमल कहा रहै, बक २ न कर गंवार ॥

चौ०—बक २ न कर गंवार करे ये बातें बे मतलब है ।

हम जोमी अवधूत रहैं रमते क्या करे गजाव है ॥

किम का था यह चमन सुख गया इसका कौन सबब है ।

हरा भरा होमया अभी ये क्या माजारा अजब है ॥

दौ०—ध्यान सत गुरु का धरते । हर जगह फिरें बिबरते ॥

लोभ ममता तजि मन से ।

करें भजन सच्चिदानन्द का हो निधरक बन्धन से ॥

माली का

दो०—माफ़ करौ मेरी खता, योगी जी महाराज ।

बेशक पूरे सन्त ही, आप गरीब निवाज़ा ॥

चौ०—आप गरीब निवाज ख्याल दुक मेरी बात पर लार्पे ।

शङ्खपती नृप गुलशन के मालिक महाराज कहामें ॥

था पूरनमल जती पुत्र उन का मशहूर जहां में ।

मरवा दिया लिया शिर अपयश भूपति इस दुनिर्वा में ॥

क०—बुढ़ापे में बरी दूजी त्रिधा नृप ने न मानी थी । आप कम-
जोर थे रानी जबानी में दिवानी थी ॥ मेज दासी को दे घोखा
महल पूरन बुलाया था ॥ वमल चाहा था रानी ने न उसने मन
डिमाया था ॥ तो जल कर पापिनी ने पुत्र को पातक लगाया
था । जती था बृहन्चारी था सा व्यभिचारी बनाया था ॥
महीपति को बुद्धा महलों में अपना रङ्ग चढ़ा कर के । करा के
कत्ल पूरन का निशा दीना मिटा कर के ॥ हमारा धार था
जिमरी ख्याल उसका ही आषा है । आप की शान शौकत देख
कर सन्देह छाया है ॥ ये था गुलज़ार गुलशन होमया वरबाद
बस तब से । क्रदम आये तुम्हारे प्रभु हुआ आवाद बस तब से ॥

पूरनमल का

दो०—सुन अपना मरवा दिया, कहा नारि का मान ।

हम ऐसे के नगर में, करे' नहीं जल पान ॥

चौ०—करे' नहीं जखपान नाम नृप के से धवराते हैं ।

नगर अधर्मी के में हम नहि खाने को खाते हैं ॥

हरा हुआ किस सबब चमन अफ़सोस बड़ा लाते हैं ।

तौहमत लगे खामखां को हम अभी बले जाते हैं ॥

क०—बिचरते हर जगह गोविंद का नित ध्यान धरते हैं । कन्द
फल मूल खाकर के यहाँ गुज़रान करते हैं ॥ विषय भोगों से

मन को खींच कर तृष्णा को कर बस में । चमा मन धारि
सब बोलें बुरे कर्मों से डरते हैं ॥ ऐशो अशरत जो हैं जग
में समझ भिथ्था रखे हमने । रहें निर्भय न हम संसार के
बन्धन में परते हैं ॥

माली का

दो०—श्रवण विनय मेरी धरौ, कहूँ दोऊ कर जोर ।

जाओ यहाँ निराज प्रभु, मानों मोर निहोर ॥

चौ०—मानों मोर निहोर यहाँ आसन महाराज लगाओ ।

करूँ टहल तुम चरणों की दित चित से कहीं न जाओ ॥

लाऊँ नृप को बोल उन्हे' प्रभु सद उपदेश सुनाओ ।

हरौ तिभिर अज्ञान ज्ञान रूपी रवि कमल खिलाओ ॥

दो०—अनुग्रह स्वामी कीजै । दरश भूपति को दीजै ॥

दुखिन के बलेश मिटाओ ।

घोर शोक में डूब रहे नृप उन को आप बचाओ ॥

पूरनमल का

दो०—माली तेरे बचन को, किया मैंने मंजूर ।

मालिक अपने को यहाँ, ला तू बोल जरूर ॥

चौ०—ला तू बोल जरूर ज्ञान हम उस को समझावेंगे ।

मैंटे सकल विकार मुक्ति का मारम बतलावेंगे ॥

तेरे कहने से इक दो दिन यहाँ ठहर जावेंगे ।

जावेंगे फिर प्राणराज श्री गङ्गा जी न्हावेंगे ॥

दो०—काम सन्तों का है माली भजन में लौ लगाने का । धर्म
शुभ कर्म तीरथ धाम कर आयु बिताने का ॥ जो फँस माया के
बस ग्राफिल हैं दुनियाँदार दुनियाँ में । फर्ज है ज्ञान शिचा दे
पेत उन को कराने का ॥ मोह मद में जो अन्धे हो भटकते हैं
कुमारग में । लमा कर ज्ञान का अजन स्वर्ग उन को दिखाने का ॥

कवि का

दो०—सुन कर पूरन के बचन, माली मन हरषाय ।

पहुँच कबहरी नृपति से, बोला शीश नवाच ॥

माली का

दो०—शीश नवा बिनती करुं, राजन पति महाराज ।

साधू एक अज्ञमत भरा, आया स्वामी आज ॥

छं०—आते ही उम के महीपति गुलजार गुलशन होमया ।

नहीं खिजां का नामो निशां छविदार गुलशन होमया ॥

हैं शील सानर सन्त जी गुण पुञ्ज सुधड़ स्वरूप हैं ।

तप तेज बुख पर शांति नम्र स्वभाव छवी अनूप हैं ॥

कर खुशामद बैठा ल गुलशन में उन्हे घाया हूँ मैं ।

चल कर करौ दरशन बुलाने आप को आया हूँ मैं ॥

कवि का

दो०—माली के सुन कर बचन, शङ्खपती भूपाल ।

ले कर सब को साथ में, गए चमन ततकाल ॥

चौ०—गए चमन ततकाल नृपति के इषं हृदय में आया ।

नहीं खिजां का नाम नजर गुलजार गुलिस्तां आया ॥

तल्लते पट्टी रौस साफ सुथरी मो अभी बनाया ॥

बैठा देखि सन्त जी के चरणों में शीश नवाया ॥

दो०—जोर कर सन्मुख जाके, बैठि गए नृप हरषा के ॥

भक्ति भद्रा उर छाई ।

अति निहोर कर भूपति ने जोगी को गिरा सुनाई ॥

शङ्खपति का

दो०—चरण परस बिनती करुं, योगराज सुखरुन्द ।

दर्शन कर प्रभु आप के, हुये सर्व आनन्द ॥

छं०—सखा चमन कीना हरा सतगुरु ही परे सन्त ह

विपता हरी मो दास की मेरे लिए भगवन्त ही ॥ आराम

विभाम स्वामी वाग मेरे कीजिये । धन धाम भोजन वस्त्र

इच्छा हो यहां से लीजिये ॥ मन क्रम बचन से आप की से

करुं मैं निश दिना । तुम चरण रज को शीश निज स्वामी ।

निशि दिना ॥ किस के हौ बेटा शिष्य किन के और कहाँ
ज्ञान है । कब से औ किस कारण लना स्वामी तुम्हें ये ज्ञान है ॥

पूरनमल का

दो०—जोगी होते वे वतन, कहीं न उन का ग्राम ।

जिस जा तबिबत लग लई, कर दिया वहीं मुकाम ॥

चौ०—कर दिया वहीं मुकाम जक्त में नहीं किसी से नाता ।

राजपाट धन धाम कुटुम सब भूँठा नृपति दिखाता ॥

माया के बस हो प्राणी अपना अपना बतलाता ।

जिस तन पर अभिमान करै वह भी तौ साथ न जाता ॥

क०—इसी से जोड़ सब भ्रमड़ा भजन ईश्वर का करते हैं ।

जिन सँसार बंधन को स्वेच्छा से विचरते हैं ॥ समझ कर

करस पटरस सबै सम दृष्टि से देखे । न कुछ धन धाम की

छा उदर भिक्षा से भरते हैं ॥ भोग को भोग सम जानें बसन

ष धार आभूषण । महीपों के ये प्यारे सन्त इन से मन में

रते हैं ॥ योग पदवी डिगा कर के जो जग में जन्म लेते हैं ।

ही होते हैं भूपति चक्र माया के में परते हैं । इसी कारण से

राजन विलक्षण भोग की पदवी । बिना धारण किये इस

न भव सागर से तरते हैं ॥

दो०—परम पद पंथ सुहावन । योग पदवी मन भावन ॥

यही निगमामम भावे ।

मनक्रम बचन सुश्रूषा कर भव आवामवन मिटावे ॥

शंखपति का

दो०—स्वामी सांची आप की, परमारथ में प्रीति ।

सत्य कठिन है योग पद, गूढ़ ज्ञान मोतीत ॥

—गूढ़ ज्ञान मोतीत यथार्थ यही योग के लक्षण ।

सुखम रीति से राज योग पदवी का किया निरीक्षण ॥

ब्राह्मिण्य चोगेश आप की पुनि २ करे प्रदक्ष्य ।
तुच्छ बुद्धि स्वामी हम जानें किमि तुम ज्ञान बिलक्ष्य ॥
दौ०—आप प्रभु अन्तर्यामी । सिद्ध सत् गुरु ही स्वामी ॥
मेरी सन्ताप मिटावौ ।

सखी चमन आपने निज अजमत से हरौ बनायौ ॥

पूरनमल का

दौ०—क्यों ये गुलशन आप का, सख मया भूपाल ।
कौन कष्ट तुम को कही, अपने दिल का हाल ॥

शंखपति का

दौ०—सबव बताने में प्रभो, पाउं दुख अनाध ।
योनी जी मुझ दास से, रना बड़ा अपराध ।

छं०—अपराध अति हम से हुआ होता न मुझसे व्यान जी । रानी
के छल में आन के मैं बन गया अज्ञान जी ॥ प्राणों से
प्वारा पुत्र पूरनमल दियो मरवाय के । बस तभी से गुलशन
मया महाराज ये मुरझाय के ॥ निर्दोष था ज्ञानी था सुत मैं कई
निश्चिथ आप से।बिन कुँवर पूरन के जलै निशि दिन जिमर संतापसे ।

पूरनमल का

दौ०—क्या होता अब गम किए, मन में तनक विचार ।
पैदा से ना पैद हो, है जग का व्यवहार ॥

शंखपति का

दौ०—जिमर मेरे को सन्तजी, बंधे न सब करार ।

होता है कुछ भ्रम सुभै, स्वामी तुम्हें निहार ॥

छन्द—देखा है जब से आपको सन्देह है स्वामी मुझै । होता
नहीं दिल को सब प्रभु रज है भारी मुझै ॥ पूरन से मिलती
हुई सब स्वामी तुम्हारी शान है । चितवन हँसन तनकी गठन
वैसी ही छवि मुसकान है ॥ दीजे मिटा भ्रम सन्त जी की ब्रैइना-
पत की नजर । वीसी जिसे पूरन ही तुम कर दिये कईने अपरा ॥

पुरनमल का

दो०—अधरज की सी बात तुम, करते हो भूपाल ।

मर के का जिंदा हुआ, है किस तःफ खयाल ॥

अन्ध—मरवा दिया तुमने जिसे वह जी सके किस तौर से ।

क्यों मोह बस अन्धे हुए सोचौ नृपति दुक गौर से ॥

पडले दिया मरवाह सुत भूपाल अब रोते हो क्यों ।

बैठी सबर कर जिनमें अशकों से मुंह धोते हो क्यों ॥

खपति का

१०—माया है ईश्वर की प्रबल पाता न कोई पार प्रभु । उत्पति

जै जन्म को वही पल में करै संहार प्रभु ॥ उस विश्वपति

की विरनु की माया निराली है सभी । स्वाधीन है आधीन है

उसके ही सब सन्सार प्रभु ॥ चाहै जिसे राजा करै चाहै जिसे

देरू कर । चाहै जिसे मारे जिलावै उम्मी के अधिकार प्रभु ॥

अथ रेणुका माता का कीना क्रोध वश हो परशुराम । यमदग्नि

द्वारा जिलाया उसके लिये दो बार प्रभु ॥ हस्विन्द सतधारी का

सुत लिप्या नाम ने इस मर गया । जिंदा हुआ रोहिताश्व भी

अन में तौ करौ विचार प्रभु ॥ श्रीकृष्ण ने अपने गुरु के पुत्र

को दीना जिला । नृप मौरवज ने सत्य हित हनि दबौ स्तन-

कुमार प्रभु ॥ महाराज वह भी जी पड़ा घटना है ऐसी बहुत सी।

पुरन ही तुम बीसी जिसे मानूँ न कहौ हजार प्रभु ॥

पुरनमल का

१०—क्यों हो रहे बेहोश ऐसे होश में आश्रौ नृपति । अवधूत

जोगी को न अपना पुत्र बतलाश्रौ नृपति ॥ जो ईश ने कायम

किये हैं नियम इस सन्सार के । विपरीत उसके हो न सक्ता

कुसल क्यों पाश्रौ नृपति ॥ जो अमर देह अनित्य मानों सत्व

परी कहन को । हृदा न जिन्दा हो सके क्यों चित्त भटकाश्रौ

नृपति ॥ लीजै मिटा अम सब बुला बस्ती के बाशिंदा सकल ।

पुरन हूँ यो मैं संत हूँ पहचान करवाश्रौ नृपति ॥

कवि का

दो०—योमी के सुन कर बचन, खुशी हुए सुलतान ।
कहन लगे इस तौर से, बुला पास दीवान ॥

शंखपति का

दो०—तनक न करौ अबार तुम, रूपेशाः दीवान ।
वाशिदे सब शहर के, इकठे हो यहाँ आन ॥

कवि का

दो०—आज्ञा पा दीवान भूट, गया शहर दरम्यान ।

कौतवाल को बुला के, समझाया कुल ध्यान ॥

क०—दरोता ने शहर सारे में ये इतला करादी है । चलो सब
बाग़ कानेर नारि पिटवादी सुनादी है ॥ महल में जाके फूलन्दे
ब अम्वादे के समझाके । दोऊ बेठार डोलों में दर्ई गुल-
शन को भिजवाके ॥ हज़ारों नारि नर खुश हो चले बस्ती से
आते हैं । दरश करते हैं साधू के चरण में सर झुकाते हैं ॥
धूम भारी हुई गुलशन में सब इन्ला नचाते हैं । तौ कर श्हा-
मोश सब काे सखुन पूरनमल सुनाते हैं ॥

पूरनमल का

दो०—जो इस दम मौजूद हैं, छोटे बड़े तमाम ।

होकर के लायेश सब, बैठी बा आराम ॥

ला०—बैठी सुख से भाई मत धम मचाओ । क्यों धक्का हककी
कर तकलीफ उठाओ ॥ ऐ भाईयो सुनौ अब सकल लगा कर
कान । साधू हूँ या पूरनमल हूँ करौ मेरी पहचान ॥ यह
नृपति तुम्हारा पूरन मुझै बतावै । मर कर को जिंदा हुआ
इन्है समझावै ॥ ऐ भाईयो नृपति माया बस है अज्ञान । क्या
कीनी पहचान कहौ जी रूपेशा दीवान ॥

रूपेशाः दीवान का

ला०—जो की मैंने पहचान सो अभी बताऊ । अपने मन की

तुम से नहीं बात छिपाऊं ॥ महाराज कुंवर पूरन की शोकव
 शान । मिलती है आप से सकल सुरत मुरत मुसकान ॥ कुल कतै
 बज्रह रंग डङ्ग और चाल तुम्हारी । तन गठन हंसन चितवन
 वोलां अति प्यारी ॥ महाराज चिबुक पर ऐसा ही ठीक निशान।
 किये किसी ने अमर तुम्हीं पूरन ही की पहचान ॥

पूरनमल का

ला०—मालिक से क्यों दीवान खिल्लाफ़ कहोगे । जो कहा नृपति
 ने वह ही आप कहोगे ॥ दीवान आपने की भूँठी पहचान ।
 मरवा दिया पुत्र को क्यों भूपति ने करिये ध्यान ॥ तस्कर था
 या कामी कपटी व्यभिचारी । क्या करी छाता दो बता हकीकत
 सारी ॥ दीवान रहे सब उसै नेक बतलाइ । फिर सामन्त पुत्र
 को दीना क्यों नृप ने मरवाइ ॥

दीवान का

दा०—स्वामी बीती दास्ताँ, मत कहवाओ आप ।
 अन्तरयामी ही प्रभू, मेंटौ सब सन्ताप ॥

पूरनमल का

दा०—जो तुम को मालूम हो, कह दो सच दीवान ।
 दोषी और निर्दोष की, करूँ अभी पहचान ॥

दीवान का

दा०—अगर आप की सन्त जी, इसी तरह है राय ।
 तौ मैं सारी कैफ़ियत, दूँ आप को सुनाय ॥

क०—कुमर भूपाल का पूरन निहायत धर्म धोरी था ॥ नेक
 नीयत था ज्ञानी था जती था बृह्मचारी था ॥ एक दिन श्वात
 महीपति पर बड़े उत्साह का आया । जिकर जिस में लिखा
 एक नृप सुता के ब्याह का आया ॥ गए भूपति स्वयम्बर को
 ब्याहि दूजी त्रिया लाये । एक घर के नई रानी ने दो आते ही
 करवाये ॥ लिखा बुलवा कुंवर पूरन को उस ने महल बाँदी से।

पृथ्वी पता आगे का लगेगा सहल बांशी से ॥

पूरनमल का

दी०—फूलन्दे और कुंवर से, महलों के दरम्यान ।
कथा गुजरी थी दास्तां, कर अनुचरी बचान ॥

बांशी का

दी०—जो सच २ पूछौ मुझ, योभी जी महाराज ।
तौ मैं बीता हाल सब, कहूं आप से आज ॥

ला०—एक दिन सिंगार कर ये फूलन्दे रानी । रही भांक
भरौखन से इत उत दोबानी ॥ महाराज उधर से पूरनमल
सरदार । जाते थे बाग को लिवा रानी ने उन्हें निहार ॥
देख कर शान शौकत सुधि बुधि विमरानी । मुश्ताक हुई बेटे
पर गे मस्तानी ॥ महाराज मैंने समझाई थी हरचन्द ।
कहने मेरी सन्तजी न इन की आई जरा पसन्द ॥ कहने इन
के से मैं गुलशन को धाई । पूरनमल को हमराह लिवा कर
लाई ॥ महाराज बताई थी इन को बीमार । सुन कर आया वह
महलन में तनक न करी अवार ॥ रानी ने की बेटा संभ
भटका पटकी । करने को भोग पूरनमल से इन हटकी । महा
राज कुमर नीचे को कर के नैन । माता करी माफ मुझ को
यो लमा दमबदम कैन ॥ मजबूर छोड़ वह पेटा और कटारी ।
भग मया महल से पूरनमल बृद्धचारी ॥

छन्द—रानी ने राजा को बुला घोखे का जाल बिछा दिया ।
पूरन किषा जवरन जिना भूपति को यो समझा दिया ॥
पूछा था मुझ से नृपति ने बातें बनी दीनी मैंने ।
जैसा कहा रानी ने हां में हां मिला दीनी मैंने ॥
रानी के कहने का अजी विश्वास बिलकुल आगया ।
पूरन कुमर मरवा दिया अपवश जगत में का मया ॥

ला०—महाराज नहीं छोड़ा उस ने ईमान । काबम रहा घरम पर
स्वामी पूरनमल सुझान ॥

पूरनमल का

दो०—क्या कहती ये अनुचरी, कर दिल अन्दर ख्याल ।

रानी त भी बता दे, सच्चा सच्चा हाल ॥

छन्द—दौना बता सच होल बोली झूठ तो दुख पाइनी । अपवश
जमत में होषमा आखिर नरक को जाइगी ॥ तारीफ पूरन की
करें नर नारि सब इस नगर के । कहते हैं सच था हैं सभी ये
पद्मपाती कुमर के ॥ नृप पुत्र को अशराफ नेक शरीफ बतलाते
हैं सब । उस की गृहन्वत यादगामी में ये दुख पाते हैं सब ॥
क्यों बन गई ऐसी निठुर रानी ये तैने क्या किया । कहते हैं
सब मौसी ने पातक लमा के मरवा दिया ॥

फूलन्दे का

दो०—मो पापिन से बन गया, स्वामी बड़ा अधर्म ।

बिना छता मरवा दिया, सुत को किया कुकर्म ॥

भजन—यों ही मरवायौ मैंने कुमर हजारी । यों ही मरवायौ
बेटा को पाप कियों अति भारी । निर्दोषी को दोष लमायौ
ऊंच नीच मन नेक ना बिचारी ॥ योंही० ॥ हुई जवानी
में दीवानी सारी बुद्धि बिसारी । सुत के ऊपर रिच दिमायौ
मो सम कौन अधरमिन नारी ॥ योंही० ॥ कहन न टुक बांकी
की मानी समझा समझा हारी । धमकाई महलन बुलवायौ
पूरनमल सौ सुत ब्रह्मचारी ॥ योंही० ॥ दिलबर दिलजानी कह
सुत से अपनी जीम बिगारी । ऊंची नजर करी नहीं बानें कहत
रह्यौ मोसे मौसी महतारी ॥ योंही० ॥ पतिव्रत धर्म सन्त जी
सुत ने बरबाँ मेरे अगारी । एक न मानी कहन पुत्र की इरक
नशा में मैं तो भई मत्तवारी ॥ योंही० ॥ जबरन छीन लई छैषा
से फेंटा और कटारी । दे सबूत भूपति को झूठा सितम कराई
मैंने सुत की इवारी ॥ योंही० ॥

पूरनमल का

क०—ये क्या किया निर्दोष को रानी तें दोष लगा दिया । घर-मात्मा को कर कपट पापात्मा जो बना दिया ॥ बुद्धवा महल छल फन्द से अनिचित करी करजन्द से । तू नहीं डरी गोविन्द से तैने कुल को दाग लगा दिया ॥ बाँदी से कर तू ने सन्हा भूपति को महलों में बुला । कैसे तेरा होना भला बोखे का जाल बिछा दिया ॥ निर्दोष को रानी सता क्या मिल गया तुझ को बती ॥ मरवा दिया उसै बेखता दुनिया से नाम मिटा दिया । राजा बड़ा दुर्भाग या बेटा का दिल पर दाग था । जोगी का दिया चिराग था उस को भी तू ने बुझा दिया ॥

फूलन्दे का

दो०—स्वामी दासी से बना, बेशक बड़ा कसर ।

अब मुझको ज्यादा प्रभो, करौ मती मजबूर ॥

बहरत०—जो था हीना सो होकर रहा सन्त जी, मैं चरण आप के में झुकाती हूँ सर । अपनी करतूति से खुद ही लाचार हूँ, मैंने मरवा दिया हा हजारी कुमर ॥ मो अधरमिन ने कीना है अधरम बड़ा, सुत की नेकी में स्वागी न कुछ भी कसर । कैसे उद्धार हो मेरा इस पाप से, अब बताओ जतन कर महर की नज़ार ॥

पूरनमल का

बहरत०—क्यों तू रोती है होती है लाचार अब, बृहचारी को पहले सताया तैने । तू हुई पाप में लीन खुद पापिनी, धर्म धारी को पापी बनाया तैने ॥ बया था मतलब तेरे दिल का दे सब बता, जो जती को महल में बुलाया तैने । तेरा उद्धार कर तुझ को बरदान दूँ, क्यों कि कुल हाल सच्चा बताया तैने ॥

फूलन्दे का

बहरत०—इच्छा सन्तान की थी मुझै हे प्रभो, पुत्र होने का नृप से सहारा गया । आश पूरन हो पूरन से मन में समझ, किया अधरम धरम ना बिचारा गया ॥ बृहचारी को महलों बुलाया

मैंने, तो भी निष्फल मनोरथ हमारा गया । शाय आषा न कु
भी मेरे सन्त जी, वे खत मारा परन दुखारा गया ॥

पूरनमल का

बहरत०—ऐरी रानी वृथाँ रोवै हो २ बिकल, काहे निष्फल मनो-
रथ तुम्हारा गया । शान शौकत में पूरन से मिलता हुआ,
होगा बेटा हुकम हो हमारा गया । जा चली जा न करना तू
अधरम कभी, तेरे दिख का हो दुख दर सारा गया । जो गया
सो गया फिर के आया हुआ, जग में रानी न कोई निहारा गया ॥

कवि का

दो०—पूरनमल के बचन सुन, रानी परम हुआस ।
रूपेशाः आ सन्त से, करन लगे अरदास ॥

रूपेशाः दीवान का

दो०—चरण कमल में प्रभु के, पुनि २ नाऊं माथ ।
मेरी भी बिपता हरी, सतगुरु दीनानाथ ॥

१०—हे सत्य सतगुरु सख्त दुख सबका मिटाया आपने ।
रानी अधम पापिन को भी गम से छुटाया आपने ॥
यह बाग मुह्त का पड़ा था सुख कर बरदाद हो ।
कर के दया हे दयानिधि हरिधल बनाया आपने ॥
कीजै अनुग्रह दास पर निज चरण का सेवक समझ ।
आ दीन जन के दुख हरण कर सुख दिखाया आपने ॥
बन्ध्या है मेरी नारि सुत से नाथ प्रभु बंधित रखा ।
बेड़ा किनारे क्यों न सेवक का लजाया आपने ॥
इस वृद्धपन में मेरी स्वामी बस यही अभिलाष है ।
दीजै मुझ भी पुत्र सब का दुख नशाया आपने ॥

पूरनमल का

३०—कर भवान श्री भगवान का क्रौरन ही बेड़ा पार हो ।

मन्त्री तेरा भी इस अमम दुख से अबिस उद्धार हो ॥
 यह बिमल फल दीना मैंने देना खिला निज नारि को ।
 हो गर्भ धारण त्रिया के अनुकूल जो करतार हो ॥
 रह धर्म पर आरूढ़ तू सन्तान से फूलै फलै ।
 निश्चय समझ मन में तेरे पैदा सुवन सुकुमार हो ॥
 चारों पदारथ जगत में पाना सुलभ है ऐ साचिब ।
 काव इन्द्र को गोविंद का जो निष्कपट आधार हो ॥

कवि का

दे०—पूरनमल सब को करै, था बिधि सद उपदेश ।
 तब आ अम्बादे कही, मन में पाय कलेश ॥

अम्बादे का

दे०—फूलन्दे और सचिब की, दर बिपति प्रभु कीन ।

मो दुखिया दुर्भाग्य की, खबर न स्वामी लीन ॥

ला०ल०—दीन दुखित अन्धी का दीना जोभी जी तुम ग्योन
 बिसार । सुत बियोग में सङ्ग स्वामी मैं निश दिन कष्ट अपार ॥
 कदें न पापी प्राण हमारे भारी दुख उठाती हूँ । बेकल होकर
 हर बड़ी दम से नीर बहाती हूँ ॥ बीते बारह साल रात दिन
 मछली सी घबड़ाती हूँ । तड़प २ कर धरणि पर पलट पछारे
 खाती हूँ । खाल जहर मले अपने में मरजाङ्गी मार कटार ॥ सुत० ॥

पूरनमल का

ला०ल०—हौना सो होगया अरी रानी कषादन बातों में सार ।
 क्यों रोती है व्यर्थ अब मन से झूठा मोह बिसार ॥ जिस दम
 मरा पूत उस दम ही क्यों नहि तैने ममारे प्राण । दुख पाने
 को रही थी जिंदो क्यों बतला नादान ॥ अब ये लोभ दिखाने
 को क्यों करती सुत का शोक महान । सुख से रहता नहीं कोई

माई यह सच्ची लो मान । मरना क्या आसान समझ रक्खा
रानी मन माँहिं विचार ॥ क्यों० ॥

अम्बादे का

ला०लं०—स्वामी सत्व बचन कहते ही मरना नहीं सुगमआसान।
मरजाती तौ भोगता कौन कर्म फल दुख महान ॥ पूर्व जन्म
त्रै किये पाप सो उदय हुए अब स्वामी आन । मिटै न हरमित्र
संत जी हौनहार होती बलवान ॥ आँखों से दीखता न मुझको
हुई सब तरह मिट्टी इवार ॥ सुत० ॥

पूरनमल का

ला०लं०—अब मिलने को नहीं पुत्र परन तेरो कर मन में रुषाल।
मूहत होमई मरे' उस को बीती है बारह साल ॥ जो बरदान
माँगना रानी माँग दऊ' तुझको ततकाल । दीन देख कर तेरे
ऊपर हित चित से हुआ दयाल ॥ कृपा करे' गीविंश प्रभू तौ
दऊँ दुख तेरा सब टार ॥ क्यों० ॥

अम्बादे का

दो०—और न कुछ ह्छा प्रमो, यह बर दीजै मोष ।
अन्धी से स्रक्त करौ, द्रश आपका होय ॥

कवि का

दो०—माता के सुन कर बचन, परनमल ततकाल ।
सुमिर हृदय गुरु देव कौ, दई विभूति निकाल ॥

पूरनमल का

दो०—यह विभूति एकान्त जा, नैन लमाओ मोष ।
हो ब्रकाश गुरु कृपा से, सब सन्ताप नशाय ॥

कवि का

दो०—सुन कर पूरन के बचन, अम्बादे हरषाय ।
जा विभूति एकान्त में, नैनन लई लमाय ॥

छं०—लगतते विमल्लुती ल वये, दोऊ हग उजारा होगया ।

दीखन लगी है त्यों का यों दुख हर सारा होमवा ।
 हो मगन रानी सन्त के दरशन किये हैं आन के ।
 कहने लगी दुख पाय सुत अपना लिया पहचान के ॥

अम्बादू का

दो०—तू पूरनमल लाल है, लिया मैंने पहचान ।

रूप बनाया सन्त का, घोखा दीना आन ॥

बा०—घोखा दीना आन जाँच मेरी में नहीं कसर है ।

एयों का त्यों निशान तिल का बेटा तेरे मुखपर है ।

भूत बाद मिला तू सुत ईश्वर की महर नजर है ।

बतलादे जौना तुझको किसने कर दिया अमर है ॥

क०—मया मारा तू जब से चैन हक पल को न पाया है ।

बादगारी तैरी में लाल दुख भारी उठाया है ॥

ब हरिकल से ये ईश्वर ने वक्त तुझको दिखाया है ।

किया राम को रफ़ै बिलुड़ा हुआ बेटा मिलाया है ॥

दो०—अजब ईश्वर की माया । भेद उसका नहीं पाया ॥

जिघर की फेर नजर दे ।

राई को पर्वत करदे पर्वत को राई करदे ॥

पूरनमल का

दो०—एवों माता हुई बावली, दीना होश बिसार ।

पूरनमल सुत बताती, तू हमको हर बार ॥

बा०—तू हमको हर बार बताती है पूरनमल माता ।

मरा हुआ इन्सान न फिर बापिस दुनियाँ में आता ॥

माता पिता पुत्र भावा सब जग का भूँटा नाता ।

माया के बस हो प्राणी अपना अपना बतलाता ॥

दो०—छोड़ इस मोह जाँच के । हटा दिख से कापाल को ॥

कहै प्रया मेरा मेरा ।

बाँ कुछ तेरा ना कुछ येस है यहाँ रोम बसेरा ॥

अम्बादे का

दो०—मैं हरनिज मानूं नहीं, क्यों देता है चाल ।

छाती ठंडी कर मेरी, जोदी में आ लाल ॥

बा०—मो दुखिया को तू क्यों दुख दिखलावे है । कर तरस
कन्हैया नाहक तरसावे है ॥ मेरे लाल उठावे मैंने कष्ट महान ।
तब तेरी सरत दिखलाई बेटा भी भगवान ॥ सौतिन बैरिन ने
तुझे कटक करवायी । लेकिन ईश्वर ने फिर तू कुमर जिलायी ॥
मेरे पुत्र सुनादे अब तू सारा हाल । किसने और कैसे जिन्दा
कीया पूरनमल लाल ॥

पूरनमल का

बा०—हा राजव करे जोनी को पुत्र बतावे । क्यों मात बिना
मतलब तू हमें सतावे ॥ ऐरी रानी न मैं पूरनमल तेरा लाल ।
हूं अबधूत पूत जोनी का है किस तरफ लाल ॥ जग में हों
लालों तेरे सुत की सानी । भ्रम के बस होकर क्यों कर तू
बौरानी ॥ ऐरी रानी जिस दिना पूरन छोड़े प्राण । क्या कह
नया उस दिना तुझ से सोच जिनर इरम्यान ॥

कवि का

दो०—सुन कर पूरन के बचन, रानी चतुर प्रवीन ।

मसके कुच दीऊ करन से, तनक न देरी कीन ।

बा०—तनक भई ना देर धार पय प्रगटी दीऊ कुचन से ।

गिरी सन्त के मुख में देखें सब नर नारि इमन से ॥

यह चरित्र लखि पुरवासी सब मगन भये तन मन से ।

अम्बादे हो सुशी पुत्र को पकड़ा दीऊ करन से ॥

दो०—देख सुत को सुख पावै । न फूली अङ्ग समावै ॥

मधुर बानी रस सानी ।

भूमि कुमर की पेशानी बोली अम्बादे रानी ॥

अम्बादे का

दो०—मो दुखिया कर आज दिख, है भगवान दयाल ।

पुनर्जन्म दे मिलायो, मुझ से मेरा लाल ॥

बौ०—मुझ से मेरा लाल मिलाया बिलुआ हुआ दुबारा ।

इबत शोक सिंधु से फिर ईश्वर ने दिया सहारा ॥

बारह साल पिछारी मुझ देखा सुत मैंने तुम्हारा ।

हुए दुख सब दूर जाइले जब से तुम्हें निहाया ॥

दौ०—हुआ जिन्दा तू कैसे । बना जोनी तू कैसे ॥

हाल सब हाल सुनाना ।

कहैं इन्द्र गोविन्द मेरे दिल का समदेह मिटाओ ॥

पूरनमल का

दो०—कल्ल कग फिकवा दिया, भूपति ने मैं मात ।

जिंदा कर संग ले गये, मुझ को मोरखनाथ ॥

छन्द—महाराज मोरखनाथ ने मैया मुझै कीना अमर ।

मैंने सकल भ्रम बाल दे कर ज्ञान कर दीना अमर ॥

आया करन दरशन तेरे चरणों में सर नाता हूँ मैं ।

दुख दूर सब के होगये तीरथ करन जाता हूँ मैं ॥

अम्बादे का

ला०—मो दुखिया को क्यों फिर दुख दिखलाता है । मैया

को तड़फती छोड़ कहाँ जाता है ॥ अब रही यही तुम कहीं न

जाओ छैया । मैया अपनी को धार बंधाओ छैया ॥ मो दुखिया

को अब दुख न दिखाओ छैया । मैं बहुत रोजुकी हूँ न

रुलाओ छैया ॥ क्यों इकनाहक मुझ को सुत कलपाता है ।

मैया को तड़फती छोड़ कहाँ जाता है ॥

पूरनमल का

ला०—अब नहीं कुपंथ में मात फँसा जाता है । ये पन्थ फकीरी

का मुझ को माता है ॥ नहीं मोह रही जग मिथ्या पहचाना

पूरन तीसरा

॥ झूठे झूठ में मन को भटकाना है ॥ कर के मन इन्द्रो
मन पार जाना है । कुछ सार नहीं दुनियाँ का तत्व जाना
॥ देखत का नाता तात भ्रातं माता है ॥ ये पन्ध फकीरी

कवि का

दो०—पूरनमल के सुन बचन, माता होइ अघीर ।
कहन लगे तब शंखपति, भर नैनों में नीर ॥

शंखपति का

दो०—पूरनमल सन्हस्र तेरे, उठै न ऊंची नार ।
अपनी करनी पर कुमर, हूँ भारी लाचार ॥
बौ०—हूँ भारी लाचार जिगर अपने शरमाऊँ बेटा ।
बिन समझे तुझको मरवाया अब पड़िताऊँ बेटा ॥
नहीं बोग के बोग उमर तुमको समझाऊँ बेटा ।
करी राज तुम राम भजन में ध्यान लगाऊँ बेटा ॥
ला०—कीना अनर्थ अति मैंने कुमर इजारी । बेखता कराई
लाल तुम्हारी इजारी ॥ मेरे लाल कटोषा व्यर्थ मला तेरा ।
ईश्वर के दरवार होय किस तरह मला मेरा ॥
छन्द—अब चेन नहीं चित को पढ़ै सब तौर मिट्टी खवार है ।
अपबश हुआ जग में मेरा हा जिन्दगी बिककार है ॥
रानी के बस फँस यह गजब बेटा मेरे से हो गया ।
सोचा न कुछ अनुचित उचित बस क्रोध के में भोगया ॥
ला०—अब खता हमारी दिल से कुमर बिसारी । बल स्वाल-
कोट का छैया राज सम्हारी ॥ मेरे लाल न कर पहली बातों
का इयाज । हीना था सो हुआ हटादे दिल से रज मलाल ॥

पूरनमल का

दो०—दादाजी दिल पर मेरे, तनक न रज मलाल ।
बीती बातों का नहीं, कीजै आप खयाल ॥

श्री०—करो राज प्रम हर शोक में क्यों लाधो। गीता है ।
 भोगो सुख से राज पिता रोने से क्या होता है ॥
 रौना गम करना उक्त भरना पकिताना थोता है ।
 हीनहार बस हो प्राथी सुख दुःख बीज बोता है ॥

दो०—राज की हुकै न इच्छा । करुं घर घर में बिद्या ॥
 हुकम गुरुवर का पाया ।

बाऊंगा मैं वहीं आप का दर्शन करने आया ॥

शङ्कपति का

दो०—ठान न पेसी ठानिये, बेटा प्राथ अचार ।

भोगी बल कर राज सुख, भगवां बल उतार ॥

बन्ध—भगवां उतारो बल चारी राज सी भङ्गार तन ।
 यह तजि फकीरी मेव बल कर बङ्गुत पर बैठो सुवन ॥
 है उमर तेरी बाबु बेटा अति कठिन यह पन्थ है ।
 बकि गए बहुत इस डगर में पाया परन्तु न अन्त है ॥
 तेरे बिना मम घाम वैभव सब पड़े सूना नकर ।
 है तही अकेला पुत्र दीपक भवन मेरे का कुमर ॥

पूरनमत का

दो०—मैं हरशिव रहना नहीं, कहो आप हरचन्द्र ।

बन्धन अब सन्सार का, मेरी नहा पसन्द ॥

भजन—इस भव सागर सन्सार से हो पार हमें जानो है । ज्ञान
 पंच गुरु ने सिखाया । सुखम मुक्ति का मार्ग बताया ॥ मन
 का सब क्षंताप मिटाया ॥ नहीं रहा मोह परिवार से ॥ जग
 झूठा पहचाना है ॥ इस० ॥ राज पाट सब सम्पति नाना ।
 है इस जग में स्वप्न समाना ॥ होता तन तजि सब को जाना ॥
 बोधो तनक विचार से । मन पों ही भटकाना है ॥ इस० ॥
 सात मात दारी सुत आता । कुटुब कबीला झूठा नाता ॥ अन्ध

समय कोई काम न आता । बोलें जो हर-द्वय प्यार से ॥ फिर
सब ने भय माना है ॥ इस० ॥ न मैं मोह कन्दे में आऊँ ।
पास गुरु अपने के जाऊँ । जन से आवा नवन मिटाऊँ ॥
जो जना के सर्वाधार से ॥ मोय हृत्कि परम पाना है ॥ इस० ॥

कवि का

दो०—पूरनमल के सुन रचन, भूपति मन अकुलाव ।
आइ सर्व भर एक हम, मिरा कर्मो मश खाव ॥
सोरठा—भटपट छिपा उठाव; पूरनमल ने पिता को ।
कहन जना समझाव, धीरज दे इस बौर से ॥

पूरनमल का

दो०—अमर ठान ठानों पिता, यो सँन ऐसी आव ।
दरश कराऊँ गुरु का, मिटें सकल सन्ताप ॥
सोरठा—सुनिये श्री महागज, आँख बन्द सब कीजिये ।
दरशन होंगे आज, तुम्हें गुरु महाराज के ॥

कवि का

दो०—मात पिता को खाव दे, पूरनमल सुझान ।
नेत्र बन्द करवाव के, होवया अन्तरस्थान ॥
बन्द—होकर के अन्तरस्थान गुरु के पास भट आवा कुमर ।
कर दरश गोरखनाथ का मन माँहि हरपावा कुमर ॥
देखा न सुत को बिकल इत रानी नृपति होने जने ।
पूरन कुमर पूरन कुमर बिरुलाव कर रोने जने ॥

बंखपति का

दो०—धोखा दे के कन्हैया, करवा आँखें बन्द ।
कहाँ बिपा तू जाव कर, पूरनमल करानन्द ॥
बहरव०—ही करा बन्द आँखें सबों की कुमर, प्यान मोरख
गुरु का करावा तेने । हीना धोखा न मन में बिचारी दवा,

हुआ, सुख दिखा वेटा फिर दुख दिखाया तेने । इस अमम शोक सागर से वेड़ा मेरा, ना किनारे से छीना जमाया तेने ॥

अम्बादे का

बहरत०—छैया गैया सी मैया बिलकती तजी, हा तनक भी दया ना बिचारी कुमर । दे के घोखा गया तू कहां लाडिले, क्यों हृदयत कुटुम से बिसारी कुमर ॥ जैसे तैसे व मुश्किल से छीना मैंने, तेरी सरत दगन से निहारी कुमर । तू बकाबक ही गाबब यहाँ से हुआ, अब सबर कैसे लाऊँ हजारी कुमर ॥

शंभूपति का

बहरत०—मुझ अभागे का मन में तनक भी तरस, तू ने छीना पिरौना बिचारा नहीं । अपने माता पिता का दुखोना हृदय, मेरे छैया ये करतब तुम्हारा नहीं ॥ पाया तुम्हके निरोशा से आशा हुई, समझा होगा जुदा अब दुलारा नहीं । तू दगा दे गया मुझे पूरन कुँवर, रहा जीने का जग में सहारा नहीं ॥

अम्बादे का

बहरत०—मैंने जाना कि अब दिन हमारे फिरे, दुख टला मिल हमारा दुलारा गया । फिर पटक दुख के दुख में मुझे अब कुमर, तू बता कर किधर का किनारा गया ॥ अब करूं बैसी जाऊँ कहां मैं समा, हो जुदा मुझ से प्राणों का प्यारा गया । बिना पूरन के पूरन करूँ बिन्दगी; हो खतम आव-दाना हमारा गया ॥

कवि का

दो०—हिस्सा सोधम में कहा, ये तमाम अहवाल ।

बाकी चौथे भाग में, देखौ आगे हाल ॥

पं०—जयाराम शर्मा गौड़ के स्वाम प्रेस हाथरस में

प्रिंटर व पब्लिशर पं० राधाकृष्ण शर्मा गौड़ द्वारा मुद्रित।

संगीत महाभारत

हिन्दी भूषण परिचय नथोराम शर्मा गीत रचित

कौरव पांडव उत्पत्ति
 जरासिन्धु शिशुपाल बध
 द्रौपदी चीर हरन
 नकली द्रौपदी की बक बध
 अभिमन्यु विवाह
 कृष्ण निमन्त्रण
 ब्रह्मचर्य का प्रत्याग पहला भाग व दूसरा भाग
 कौसरा भाग
 अभिमन्यु समर
 अर्जुन प्रतिज्ञा
 जयद्रथ बध
 करण बध
 दुर्योधन बध द्रौपदी पुत्र मरण
 भीष्म शरीर त्याग
 ज्वाला का जोहर
 अर्जुन का कात
 भीरु बरमा संग्राम
 कृष्ण मौलोक गवन

द्रौपदी स्वयम्बर
 कौसरी की बाजी
 उरवसी बरव
 भयङ्कर भूत
 पैगामे जङ्ग
 भवाती बरदान
 भगवत बध
 अभिमन्यु स्वर्गवास
 जयद्रथ रक्षा बन्धन
 द्रौण स्वर्ग बाल
 शल्य बध
 कौलादी भीम
 घोड़े की चारों
 सुधनवा संग्राम
 जइगीला खन [चन्द्रदास]
 बिदुर तपस्या
 पाँडव सुरपुर गवन

गोविन्द चमन तोताराम-कृत सङ्गीत

देवा का ब्याह
 बहोरन का ब्याह
 क अफजा बहराङ्ग
 ऊदल हरन
 मङ्गला हरन

धाँधू का ब्याह
 गलखान का ब्याह
 ब्रह्मा का ब्याह
 सुरजावति का भूला

पुस्तक मिलने का पता—

...